आधुनिक संचार से जनजातियों की सभ्यता, साहित्य और संस्कृति में आये बदलावों का अध्ययन

(डिंडोरी स्थित बैगा जनजाति के संदर्भ में)

▫ डॉ. सौरभ कुमार मिश्र

सारांश :- जनजाति अपनी सभ्यताओं को लेकर बहुत ही सजग और जिम्मेदार रहे हैं। आज भी आधुनिक समाज में वे अपनी परंपराओं के लिए सजग और चैतन्य हैं। इसी का परिणाम है कि वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ने के साथ-साथ अपनी परंपराओं को भी जीवित रखने का पूर्णतः प्रयास कर रहे हैं। यह जरूर है कि उनकी नई पीढ़ी जीविकापार्जन के लिए बदलाव को स्वीकार कर रहे हैं लेकिन इसका अनुपात बेहद ही कम है। बैगा जनजाति समूहों की बात करें तो वे अपनी संस्कृति को अपनी जीवनचर्या में शामिल कर चुके हैं और इससे इतर अपना जीवन सोचते भी नहीं है। इसी कारण सरकार ने भी इन्हें विशेष संरक्षण प्रदान किया है। वन्या की ओर से संचालित होने वाले सामुदायिक रेडियो आधुनिकता के बीच परंपराओं के संरक्षण का एक विशेष माध्यम है। जिससे जनजाति समूह आधुनिक समाज को आत्मसात करते हुए अपनी रीति-रिवाजों को भी संजोए हुए हैं।

महत्वपूर्ण शब्द :- जनजाति, परम्परा, संस्कृति, वन्या, सामुदायिक रेडियो

प्रस्तावना

मध्यपदेश में एक दर्जन से भी अधिक प्रकार की जनजातियां पाई जाती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग संस्कृति और सभ्यताएं हैं। जिन्हें वे वर्षों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को देते आ रहे हैं। इन्हीं में से एक जनजाति समूह है बैगा। बैगा मध्यप्रदेश की सबसे प्रमुख जनजाति है। इन्हें जंगल का राजा या फिर प्रकृतिपुत्र बैगा भी कहा जाता है। इन समूहों की खासियत होती है कि ये प्रकृति को बहुत करीब से जानते और समझते हैं। इन्हें प्राकृतिक औषधियों के बारे में बहुत जानकारी होती है। वे इलाज भी खुद ही करते हैं। पहाड़ो या घाटियों में रहने वाली यह जनजाति समूह हिन्दी भी समझ लेती हैं। लेकिन बैगा की उत्पति के संबंध में किसी प्रकार के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं। बल्कि गांवों में लोक कथाएं और मिथक प्रचलित हैं।

मध्यप्रदेश में जिला डिण्डोरी बैगाओं का बाहुल्य क्षेत्र है। सरकार के द्वारा इन्हें विलुप्त प्राय जनजातियों में रखा गया है। इन्हें सरकार की ओर से संरक्षण भी प्राप्त है। समय के बदलते मानदंड़ों के हिसाब से अब बैगा आधुनिक समाज के साथ भी जुड़ना चाहते हैं। लेकिन ये अपने रीतियों, संस्कृतियों और सभ्यताओं से किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहते हैं। संचार के बदलते आयामों ने इनकों

▫ संपादक-सह परियोजना अधिकारी, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

इन्हीं की शर्तों के साथ अपनाने का प्रयास कर रहा है। जहां वे आधुनिकता के साथ समाज की मुख्यधारा से जुड़े और अपनी संस्कृतियों- परंपराओं को भी जीवित रख सकें। ये रिमोट इलाकों से निकलकर कस्बों तक तो आ गए, इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार की भी समझ हो गई है। लेकिन इनकी रीतियां आज भी जीवित हैं।

बैंगा की उत्पति और लोक कथाएं

रसेल के अनुसार प्रारम्भ में भगवान ने नागा बैगा और नागी बैगिन को बनाया। नागा बैगा और नागा बैगिन जंगल में रहने लगे। थोड़े दिन बाद उनकी दो सन्तानें हुई। पहली संतान बैगा और दूसरी गोंड हुई। दोनों संतानों ने अपनी बहनों से शादी कर लिया। आगे चलकर मनुराय जाति की उत्पत्ति हुई पहले संतान बैगा हुई दूसरे गोंड हुए। बैगा मुख्य रूप से मंडला, डिडौरी है।

यहाँ बैगा चक, तातर, सिलपीड़ी आदि प्रमुख हैं। इनका मुख्य निवास तलहटी और घाटियां हैं। बैगा प्रमुख रूप से प्रकृति पुत्र हैं। प्रकृति के सानिध्य में रहने के कारण त्वचा का रंग काला हो जाता है। तो कहीं-कहीं ताम्र भी होते हैं। नाक चौड़ी और होठ कुछ मोटे होते हैं। स्त्री पुरूषों के बाल लम्बे और धुंधराले होते हैं। पुरूष लम्बे बाल जन्म से ही रखते हैं।

बैगा जनजाति में आने वाली अन्य जातियाँ

जाति	गोत्र	गढ़	पहचान
दवड़िया	मरावी	देवरी	एक दौरा भात खानेवाले
रईजिया	धुर्वा	देवरी	शिकारी
घुठिया			नाले किनारे रहने वाले
गुठलिया		घाटा	
नंदिया	धुर्वा		नदी किनारे वाले
कुसरिया	धुर्वा	कोशियारी	खुसरू(उल्लू पक्षी)
उदारिया	धुर्वा		उदार वृक्ष
ततडिया		तांतर	गूंगा या तांतरा
बरंतिया	धुर्वा	बांगर	वरंगा झाड़
भुसंडिया	धुर्वा	भुसेडो	भूख से रिरियाने वाला
वरिया	धुर्वा	भुसेडो	12 स्थानों पर बैठने वाले
बगदरिया	धुर्वा	भुसेडो	बाघ मारने वाले
चलधरिया	धुर्वा	भुसंडो	दूसरी जात में बैठने वाले
भगड़िया	धुर्वा	भुसंडो	मांगने वाला
मुंडकिया	धुर्वा	भुसंडो	
करकुतिया	मरावी	भुसंडो	मुंड पकडने वाला
चड़चड़िया		ककरिया	"चाड़ा" में रहने वाला
तलरिया		चाड़ा	"चाड़ा" में रहने वाला
चपुरिया		तलिया	पानी
कुडोय	निया		
घडदइया		घोड़ा डांगरीया	लमोठ

बैगा जनजाति का पारंपरिक संचार (परंपरा और संस्कार)

जन्म संस्कारः

गर्भवती होने पर अथवा इसकी प्रथम सूचना मिलने पर रस्म नहीं निभाई जाती है। सिर्फ समय-समय पर घर या गांव की बड़ी बूढ़ी महिलाएं गर्भवती के समय-समय पर कुछ सलाह देती रहती हैं। इसे "सुनमाई" कहते हैं। बच्चा होने पर उसकी नाल काटकर उसे जमीन में गाढ़ दिया जाता है और आग लगा दी जाती है। जज्जा-बच्चा को गर्म पानी से नहला दिया जाता है। फिर स्थानीय बड़ी प्रमुख दवा पिलाती है, जिसे बड़ी उजहा कहते है। बैगाओं का मानना है कि "माई वेला जड़ी" चबाने से जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ्य रहते हैं। घर का मुखिया कई बोतल दारू स्थानीय (बड़ी) को देता है। जिससे शिशु की रोज मालिस की जाती है। छठीं के दूसरे दिन शिशु के सिर के बाल काट दिए जाते हैं। इसे "बैगा आलर" कहते हैं। इसमें किसी प्रकार का उत्सव नहीं किया जाता है। कई महीने तक जच्चा बच्चा को अपवित्र समझा जाता है, तो दोनों को घर के बाहर ही अलग झोपड़ी में रखा जाता है। तीन महीने बाद गृह प्रवेश के दूसरे दिन या सुविधानुसार पांच महीने बाद नामकरण किया जाता है। उस दिन शाकाहारी भोजन बनाया जाता है। उस दौरान सभी नाते रिश्तेदार यहाँ बुलाए जाते हैं। गृह स्वामी अपनी क्षमता के अनुसार एक-दो पीपे मंद (महुआ की बनी शुद्ध दारू) बुलवाता है। सभी लोग आंगन में बैठते हैं। मां नवजात शिशु को लेकर दरवाजे के बीचो-बीच में बैठ जाती है और नामकरण संस्कार गांव का कोई वरिष्ठ व्यक्ति करता है। नामकरण दिन महीने, पशु -पक्षी नदियों देवताओं के नाम और बच्चे की सूरत-शक्ल के अनुसार किया जाता है। सिर्फ लड़की ही पैदा होने की स्थिति में रीति के अनुसार शिशु को जिस सूप में सुलाया जाता है। उसमें सभी धान मिलाकर रखते हैं। जिसे बरोदाना कहते हैं। ऐसा करने से कोख का नारा बदल जाता है और अगली संतान लड़का होती है। लेकिन लड़का-लड़की में कोई भेद नहीं होता है।

विवाह संस्कार

यहां भी विवाह एक पवित्र बंधन माना जाता है। लेकिन एक ही जाति में विवाह वर्जित है। गोत्र तो एक हो सकता है, लेकिन एक जात का नहीं होना चाहिए। लेकिन मामा और बुआ की लड़की से विवाह हो सकता है। बैगा जनजाति में लड़कियों के भी पूर्ण अधिकार है। बैगा 16-17 साल तक की लड़की को वयस्क मानते हैं। लड़की अपने वर का चुनाव स्वंय कर सकती है। साथ ही विवाह पूर्व यौन संबंध कन्या अपनी इच्छा से कर सकती है। इस मामले में बैगा सहिष्णु है। यौन संबंध कायम करने का मललब वे एक दूसरे के लिए पति-पत्नी हो गए। बैगा समाज में छ : विवाह पद्धति प्रचलित है।

मंगनी या चढ़ विवाह

लड़के के पिता गांव के कुछ लोगों को साथ मंद (दारू) लेकर लड़की वाले के घर पहुंचता है और लड़की के पिता से बोलता है। मुझे प्यास लगी है। ये इशारा होता है कि हम शादी के लिए आपके पास आए हैं। पंच और लड़की के पिता बोलते हैं कि पहले लड़की की रजा पूछ लो। अगर लड़की- मैं कुछ नहीं जानती मंद मत पीयो का मतलब उसकी स्वीकृति नहीं है। और अगर लड़की मेरे से क्या पूछते हो मंद पीयो कहे मतलब उसकी रजामंदी है। इसके बाद लड़के का पिता नेग स्वरूप दो बोतल मंद और निकालकर सभी में बांटता है। सहमति के 15 वें दिन लड़के वाला दस-बीस आदमियों के साथ लड़की वाले के यहां आता है। लड़का भी साथ आता है। दो पीपा मंद

लेकर आता है। इसे सगाई बारात कहते हैं। लड़की द्वार पर "विलमा" गीत गाकर नृत्य करती है। पीपे से एक बोतल मंद निकालकर मुकद्दम को दी जाती है। साथ ही आठ बोतल पंचों को दी जाती है। मंद पीते ही लड़की पंचों की धर्म कन्या बन जाती है। इसे "बरात दारू" कहा जाता है। लड़का-लड़की एक दूसरे के विपरीत पैर करके बैठ जाते हैं। कुंवारी लड़कियां उन्हें हल्दी लगाती हैं। पुनः पीपे से दो बोतल दारू निकाली जाती है। जिसे पंच के साथ सभी महिलाएं पीती हैं। बरात की दारू के बाद " सगाई पक्की " हो जाती है। और बरात का दिन निश्चित किया जाता है। अब दूल्हा बारातियों के साथ मैदान में खड़ा होता है। दूसरी तरफ दुल्हन और सहेलियां खड़ी हो जाती है। नगाड़े की धुन पर दूल्हे के साथ "ददरिया" गाते हैं। दूसरी तरफ से दुल्हन के साथ वाले उसका जवाब देते हैं। फिर दो-तीन खटिया जोड़कर हाथी बनाया जाता है। लड़के वाले लड़की वालों को इस पर बैठाकर गांव की सैर कराते हैं। बरात वापस आने पर लड़के की मां बड़ भंवर फिराती है। इसके बाद दूल्हा-दुल्हन को भीतर घर में ले जाया जाता है। धनुष-बाण से मुर्गियां मारकर आंगन में लाई जाती है। दूसरे दिन नदी में स्नान करने दुल्हा-दुल्हन जाते है।

उढ़वा विवाह

बैगाओं में उढ़वा विवाह का बहुत महत्व है। सगाई पक्की होने पर विवाह की तिथि निश्चित की जाती है। उढ़वा विवाह में लड़की का पिता एवं सगे संबंधी लड़के वाले के गांव में ही पहुंच जाते हैं। विवाह का पूरा खर्च लड़के वाला ही उठाता है। विवाह की सारी रस्म उसी प्रकार होता है।

चोर विवाह

बैगाओं में चोर विवाह का खास प्रचलन है। लड़का-लड़की राजी -बाजी से भाग जाते हैं और किसी रिश्तेदार के घर पहुंचते हैं। मुकद्दम भंवर डालता है। लड़के-लड़की प्रेम सूत्र में बंध जाते हैं।

पैटूल विवाह

कुंवारी लड़की जब अपनी इच्छा से लड़के के घर घुस जाती है। ऐसे विवाह को पैटूल विवाह करते है। लड़की रात के समय में घर में चुपके से घर की पीछे से घुसती है और लड़के को हल्दी छींट देती हैं। उस समय घर के सदस्य मौजूद होते हैं। हल्दी छीटने का मतलब लड़की ने लड़के को पसन्द कर लिया। लड़की की इच्छानुसार लड़के के साथ मंडला में तुरन्त भांवर कर दिए जाते हैं। बाद में विवाह की तिथि निश्चित की जाती है। इस विवाह में लड़की वाला लड़के वाले से सौ या दो सौ रूपए लेता है। यदि लड़के का पिता खर्च नहीं देता तो लड़के को अपने ससुर के यहाँ तीन-साल तक लमसेना रहना पड़ता है। कभी-कभी चोर शादी पैटूल में बदल जाती है।

लमसेना विवाह

लड़के का पिता विवाह करने में असमर्थ हो तो पिता की मर्जी से लड़का-लड़की के पिता के यहां सेवा करने के लिए रह जाता है। ऐसे युवक को लमसेना या घर दामाद कहते है। लमसेना को सेवा में अपने ससुर के खेतो में कृर्षि कार्य, जंगल से लकड़ी काटना, मेहनत-मजदूरी करना पड़ती है। लमसेना रहने की अवधि तीन से सात वर्ष तक होती है। लड़का निष्टा से सेवा करता है तो लड़की का पिता एक वर्ष में ही शादी कर देता है। 3 या 7 साल पूरे होने पर लड़की दामाद अपना स्वतंत्र घर बसा सकता है।

उधरिया विवाह

उधरिया विवाह में दोनों पक्षों के माता-पिता की स्वीकृति नहीं होती है। लड़का-लड़की अपनी मर्जी से किसी दूर के रिश्तेदार की मदद से विवाह कर लेते

हैं। विवाहित लड़की अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे के यहां घुस जाती है। गाव के पंच इकटठे होते हैं। इस तरह घर में घुसी लड़की पर भावी देवर गर्मपानी फेंकता है। इसका मतलब है कि लड़की पवित्र हो गई। दूसरे दिन पंचों को दारू पिलाई जाती है और पहला पति दूसरे से हर्जाना वसूलता है। दावा चुकाने के बाद दोनों पक्षों में मिलोकी होती है। रुपए की मंद दी जाती है। नवविवाहिता पूर्व पति और वर्तमान पति को भोज करती है। बैगाओं में बहुपत्नी का रिवाज है। लड़की अपनी मर्जी से दूसरा विवाह कर सकती है। विधवा का विवाह घर से देवर से होता है विधवा कहीं और भी कर सकती है। परित्याग गर्भवती महिला के बच्चे पर उसके पूर्व पति का हक होता है।

बैगा जनजाति की पूजा पद्धति

अन्सर्डवाय फ्ल्यूड्स ने अपनी पुस्तक डाभमारिया में लिखा है कि बैगा जादू टोना, झाड़, फूंक, भूत प्रेत बाधाओं पर सहज विश्वास करते हैं। देवी-देवताओं, भूतप्रेम के संबोधन के लिए गीत भी है। बैगा झाड़-फूंक में अधिक विश्वास करते हैं। उनकी मान्यताएं हैं कि कई स्त्री-पुरूषों को देवी-देवताओं का प्रकोप हो जाता है। ऐसी स्थिति में गुनिया नाड़ी देखकर इनका इलाज करता है। देवी देवताओं से लेकर भूत-प्रेत सभी के लिए अलग-अलग मंत्र हैं। इनके द्वारा भूत भगाते और देवताओं का आह्वान किया जाता है। और इनके दूर करने के बैगाओं के अपने पारंपरिक उपाय भी है। ठाकुर ग्राम देवता है। जो गांव की रक्षा करते हैं। इनकी सामूहिक पूजा हर तीन साल में एक बार होती है। चंदा लगाकर बकरे की बलि दी जाती है। और वहां उपस्थित पुरूष मास का सेवन करते हैं। स्त्रियों को इसे खाने की मनाही है। खैर ग्राम माई हैं। यह भी गांव की रक्षा देवी हैं, ये गांववालों को बीमारियों से बचाती है खैर माई को अनब्याही बकरी चढ़ाई जाती है। बघेश्वर बेवर के देवता है। इन्हें बाघ का देवता मानकर पूजा की जाती है। देव की पूजा में खामी होने पर शेर बैगा को खा जाता है। होम-धूप से देवता की पूजा की जाती है। सूअर चढ़ाया जाता है। बनजारिन माई वन देवी हैं। इसे घाट के प्रारंभ या समाप्ति पर स्थापित किया जाता है। ये देवी पत्थरों का ढेर होता है। रास्ते से गुजरने वाला व्यक्ति एक पत्थर बनजारिन देवी को चढ़ाता है।

रात माई की पूजा काली अंधेरी रात से बचने के लिए किया जाता है, रात माई का निवास धनौची है। रात माई को खुश करने के लिए होम के साथ काली मुर्गी का दान करें। इस प्रकार भय और असुरक्षा के कारण बैगा कई देवी-देवताओं की परिकल्पना कर बैठे हैं। हिन्दू प्रभाव में आने के कारण हिन्दू देवी-देवताओं को भी बैगा सहज श्रद्धा भाव से देखते हैं। बैगा पुरूष प्रधान है सामाजिक रीति -रिवाजों के परिपालन में पुरूषों की इच्छा सर्वोपरि होती है। रूढ़िग्रस्त होने के बाद भी आदिम बैगा समाज नारी को स्वछन्दता प्रदान करता हैं। पसंद से विवाह करने और विच्छेदन करने का अधिकार है। समाज की धुरी पंचायत पर टिकी होती है। इसमें 5 पंच होते हैं।

धरती को माता मानते हैं बैगा

जंगलों में रहने वाली विभिन्न जनजातियों में बैगा सबसे अधिक पिछड़े आदिवासी हैं। बैगाओं को अभी भी अपनी प्राचीन परम्पराओं से उतना ही प्यार है। इनका आर्थिक आधार खेती-किसानी, घरेलू धंधे पशुपालन और जंगल की औषधियां चुनना है। बैगा अधिकतर बैवर खेती ही करते हैं। क्योंकि वे धरती को माता मानकर उस पर हल नहीं चलाते। लेकिन

इस खेती से बड़ी संख्या में वृक्षों को नुकसान होने लगा, इस कारण सरकार ने इस पर रोक लगा दी है। इससे चाड़ा के बैगाओं ने इस पर काफी नाराजगी भी दिखाई। लेकिन समय बीतने के साथ बैगा अब समतल भूमि पर भी खेती करने लगा है। वह कुटकी, माड़िया, कंगनी, बाजरा, सामा, रसैनी, ज्वार, मक्का, उड़द, बरबती सुरगा आदि बोता है। इसके अलावा बैगा अपने घरों में कई छोटे -छोटे उद्योग धंधे करते हैं। बांस की टोकनियां, अड़लिया, सूप, मछलियों के फंदे आदि बेचते हैं। इसके अलावा जंगली जड़ी बूटियां भी बैगा अपनी जीविका के लिए बेचते हैं। 1952 से 44 प्रतिशत ऋण ग्रस्त थे। 1973 में 54 प्रतिशत हुई जो वर्तमान समय में बढ़कर 90 प्रतिशत के करीब पहुंच गई है। इसका कारण आवश्यकताओं का दिन प्रतिदिन बढ़ना। बैगाओं में प्रकृति की पूजा सर्वोपरि है। लेकिन वे खुद को हिन्दू मानते हैं। वे स्वर्ग-नरक और पुनर्जन्म को मानते हैं।

बैगा जनजाति का मृत्य संस्कार

जनजाति शव दफनाते और जलाते दोनों प्रकार अपनाते हैं। अधिक दिनों तक बीमार व्यक्ति की मृत्य होने पर शव को जलाया जाता है। हैजा, चेचक से मरे लोगों को दफनाया जाता है। बैगा नदी के पास शवों को जलाते हैं। उनका मानना है कि भटकी प्रेतात्मा नदी पार करके गांव में नहीं आयेंगी। मरने वाले के आत्म-संतुष्टि के लिए सोने या चांदी के सिक्के पर दही रखकर उसके मुंह रखा जाता है। उनका मानना है कि ऐसा करने से व्यक्ति अगले जन्म में धन-धान्य से परिपूर्ण होगा। इस प्रथा को "सामरा प्रथा" कहा जाता है। किसी के घर मृत्य होने पर घर का मुखिया या कोई बड़ा " बीत गया जोग दईन" की सूचना आस-पड़ोस में देता हैं। बैगा शव को नहलाते नहीं है। इसे तेल हल्दी लगाया जाता है। नई लंगोट पहनाई जाती है। हल्दी पीसकर कफन पर छिड़कते है। खटिया को बाहर निकालकर दरवाजे के सामने उलटकर रख देते हैं। स्त्री के मरने पर उसके सिरहाने गहने उतार कर रख दिया जाता है। पुरूष के सामने धनुष-बाण, कुल्हाडी, तम्बाकू चिलम,चोंगी आदि रखते हैं। एक छोटे से कपड़े में हल्दी की गांठ,चावल और सामरा का रूपया भी सिरहाने रखते है। शव का पूर्ण श्रृंगांर करने के बाद ही प्रस्ताव कराया जाता है। दफनाने की क्रिया को मिट्टी देना कहा जाता है। श्मशान घाट पर शव के लिए खंता खोदा जाता है। खंता में सबसे पहले हल्दी चावल डाला जाता है। शव का कफन और कपड़ा निकाल लिया जाता है। शव यात्राा में आये हुए लोग खंते को मिट्टी से पूरा भर देते हैं।

शव जलाने के बाद अग्नि देने वाला व्यक्ति कफन को भिगोंकर पानी टपकाता हुआ चलता है। बाकि लोगों कतारबद्ध होकर चलते है। एक पैसा हाथ में लेकर पहला आदमी उस पर फूंककर पिछले वाले को देता है। पिछला वाला व्यक्ति यही कार्य करते हुए सिक्का पीछे बढ़ाता जाता है, और आखिरी व्यक्ति इसे पीछे दूर कर देता है। कफन गीला करके घर लौटा व्यक्ति सीधा घर में घुस जाता है, जहां मृतक की अन्तिम श्वास टूटी थी। उस स्थान पर कफन के पानी से सिंचन करता है। इससे मृतक की आत्मा को शांति मिल सके। तीन दिन तक मृतक के घर भोजन की व्यवस्था नेतगार या गांव के लोग करते है। तीनों दिन पहले घर के मालिक के साथ दो मर्द एक औरत को भोजन खिलाया जाता है। फिर अन्य लोग खाते हैं। खाने के बाद नेतगार दौरी में हाथ धुलवाता है। तीन दिनों तक मृतक के परिवार में सूतक होता है। दूसरे दिन घर को लीपा जाता है। इस दिन नेतगार हल्दी और एक बोतल शराब लेकर मृतक के घर जाता है।

यही सबका भोजन होता है। तीन दिन तक मृतक के स्थान पर दाल-चावल छींटकर भोजन कराया जाता है। पंद्रह-बीस दिन, तीन महीने, छह महीने या एक साल के भीतर क्रिया कर्म किया जाता है। पंचों के आदेशानुसार मृतक के घर वाले महुआ खरीदकर शराब बनाते है। पतरी पर खाना खिलाया जाता है। मृतक के कार्यक्रम में गीत नही होता, सिर्फ नगाड़े बजाये जाते हैं। नगाड़ा बजाने का मतलब होता है कि नहावन शुरू हो गया है।

इसके बाद घर के पुरूष एक बोतल मंद और साथ में खाने का सामान लेकर दफनाएं गये जगह पर जाकर बैठते हैं। और मंद का तर्पण करते है। दफनाई जगह पर चावल डालकर मुर्गी से चुनवाते हैं। इसके बाद सभी घाट पर पहुंचते हैं। परिवार का मुखिया और संबंधितजन बाल और मूंछ मुंडवाते हैं। लेकिन सिर के बाल पूरे तरह से नही मुडंवाते हैं। नहाने के बाद घर वापस आते है। मृतक के परिजन के द्वारा कामक्रिया में दिये गये भोज के दौरान जब भोजन बन जाता है तो गांव से बाहर भोजन रख दिया जाता है। यह क्रिया मृतक का अन्तिम भोजन कहलाती है।

आधुनिक संचार माध्यमों से बैगा जनजाति समूहों के रहन-सहन में बदलावः

बैगा गांव और बैगा जनजाति के स्त्री-पुरुष समय बदलने के साथ-साथ समाज की मुख्यधारा के सम्पर्क में भी आने लगे। सरकार ने उनकी स्थिति सही करने और जीवन स्तर सुधारने के लिए कई मुख्य योजनांए और उपयोजनाएं चलाई साथ ही इस योजनाओं को उन तक पहुंचाने के लिए सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की भी स्थापना की गई। मध्यप्रदेश के चाड़ा (बैगा बाहुल्य इलाके) में सामुदायिक रेडियों केन्द्र स्थापित किया गया है। जो 10 घंटे बैगा जनजाति के लोगों को उन्ही कीं भाषा में मनोरंजन करने के साथ उनकी सरकारी योजनाओं के बारे में भी बताता है। इस युक्ति से आज अधिकतर गांव वाले जुड़े हुए है, जो इसके प्रसारण का लाभ भी ले रहे हैं। उनकी आये दिन आने वाली समस्याएं भी सरकार तक पहुंच गई। जिसके कारण गांव को बिजली, पानी, स्वास्थ्य, रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। बैगाओं को खेती करने के लिए जमीन और जोतने के लिए साधन उपलब्ध कराये जा रहे है। बैगाओं के लिए विकास को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाई गई है। चाड़ा में बिजली के साथ सौर ऊर्जा की भी व्यवस्था की जा रही है। बैगाओं का रहन-सहन बदल रहा है। नयी पीढ़ी के लोग बोल-चाल के साथ पहनावा और खान पान भी बदल रहे हैं साप्ताहिक हाट से वे अपनी जरूरत के सामान को खरीदते है। महिलाएं गर्भावस्था के समय स्वास्थ्य केन्द्र से परामर्श लेती है और दवाओं का नियमित सेवन भी करती हैं। चाडा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से लेकर विद्यालय तक है। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई बालवाड़ी भी खोले गये है। तातंर, धुरकुहा सिलपीडी के बच्चे बालवाड़ी में नियमित रूप से पढ़ने आ रहे है। सरकार ने भी सामुदायिक रेडियों केन्द्रो को बढ़ावा देने के लिए चाड़ा सहित आस-पास के गांवों में करीब 1000 रेडियों सेट बांटे है। लेकिन अशिक्षा का स्तर अभी भी बड़े स्तर पर बना हुआ है। साथ ही बैगा दारू पीने और अंधविश्वास से बाहर नहीं निकल पा रहे है। इसका खामियाजा उन्हें बिचौलियों के चगुल में फंस कर चुकाना पड़ता है। सरकार भी कभी तेजी से काम करती है, तो कभी सुस्त हो जाती है। वर्तमान समय में प्रकृति पुत्रा बैगा के पास रोजगार की समस्या है। पारंपरिक व्यवस्थाओं से पर्याप्त आमदनी हो नहीं पाती। जरूरतें बढ़ती जाती है इसलिए सरकार की भी

जिम्मेदारी है कि उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर दिलाने के साथ उनके विकास के लिए कुछ सोचे। वर्तमान समय में संचार की स्थिति बेहतर होने के साथ उनकी समझ भी विकसित हो रही है। अब वे अपने लोक कर्त्तव्य को अपने अंचल से निकालकर बाकी अन्य शहरों तक ले जा रहे है। अपनी रीति, परंपराओं और सभ्यताओं को संरक्षित रखने की शर्त पर आधुनिकता के साथ समाज से घुलने मिलने का मन बना रहे हैं।

सन्दर्भ सूची

1. बापत एन.वी. 1950, द बैगाज इन ट्राइबल इंडिया, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, नई दिल्ली
2. बेग तारा अली 1958, द बैगा वुमन इन इंडिया, द पब्लिकेशन डिविजन गर्वनमेंट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
3. बोस एन.के. 1953, कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी, इंडियन एसोसिएटेड प्रेस, कलकत्ता
4. दास ए.के. 1979, आदिवासियों की कला और कलात्मकता, अगम आर्ट पब्लिकेशन, दिल्ली
5. दास के.पी. 1984, मध्यप्रदेश की आदिम जनजातियां और उनका विकास, इंटर इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली